Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 12, No. – 4, February - 2025, Conference Special Issue 2nd
2025

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

Dr. Anita Kumari
Assistant Professor, Department of History, Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने भेदभावपूर्ण प्रथाओ को चुनौती दी। शुरुआती सुधारक और कार्यकर्ता उभरे जिन्होंने महिला समाज की पीढ़ियां तोड़कर आगे आई महिलाएं देश की आजादी के नाम कर दी जिंदगी स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अहम रही है। उन वीरांगनाओं को नमन स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए महिलाओं ने बहुत सी प्राचीन परंपराओं को तोड़ा था अपनी परंपरागत घरेलू जिम्मेदारियां को भी छोड़ा था इसलिए स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को नमन है।

महिला मान है, महिला अभिमान है, महिला के बिना अधूरा था स्वतंत्रता संग्राम।

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के विषय में कितना भी व्याख्यान किया जाए कम प्रतीत होता है स्वतंत्रता किसे नहीं पसंद है। जो हम आज आजाद बैठे हैं आज महिलाओं की अहम भूमिका के बदौलत है जिन्होंने महिला शिक्षा, विधवा, पुनर्विवाह, बाल विवाह को समाप्त करने और महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सामान्य लाने का बहुत बड़ा योगदान रहा है उनमें राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और ज्योतिराव फुले जैसे लोगों ने इस अभियान का नेतृत्व यह समझते हुए किया कि महिलाओं को सशक्त बनाना है। सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय विकास दोनों के लिए मौलिक था। सशक्तिकरण और सामाजिक उत्थान असहयोग आंदोलन में महिलाओं को आगे आना, आत्मविश्वास हासिल करने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। इसमें कुछ क्षेत्र में पर्दा प्रथा और बाल विवाह को समाप्त करने जैसे सामाजिक सुधारो को जन्म दिया। बलिदान और सहनशीलता असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं का कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिसमें गिरफ्तारी, करावास और पुलिस की बर्बरता शामिल है। इस चुनौतियों के बावजूद वे स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ रही। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की अदम्य भावना और अटूट समर्पण देश के इतिहास का अभिन्न अंग है। उत्पीड़न को चुनौती देने बदलाव की वकालत करने और स्वतंत्रता के लिए विरासत छोड़ी है। जब हम उनके अमूल्य भूमिका पर विचार करते हैं तो हमें भारत के भाग्य को आकार देने, प्रगति और समानता की ओर चल रही यात्रा में महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका याद आती है।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में महिलाओं की बहादुरी, बलिदान और राजनीतिक कौशल की अनगिनत कहानीयां है। उनका साहस सामान्य से कहीं बढ़कर था, क्योंकि वे सक्रिय क्रांतिकारी बन गई, गुप्त समूह स्थापित किये, ब्रिटिश विरोधी साहित्य प्रकाशित किया और कठोर कारावास और यातनाएं झेली। यह महिलाएं केवल अनुयायी नहीं थी, बल्कि अपने आप में प्रमुख खिलाड़ी थी। 19वीं सदी में भारतीय महिलाओं ने सामाजिक मानदंडो से मुक्त होकर भेदभावपूर्ण प्रथाओं को चुनौती दी। शुरुआती सुधारक और कार्यकर्ता उभरे, जिन्होंने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह को समाप्त करने और महिलाओं की सामाजिक स्थिति को ऊपर उठने की वकालत की। राजा राममोहन, राय ईश्वर चंद्र विद्यासागर और ज्योतिबा फुले जैसे दूरदर्शी लोगों ने इस अभियान का नेतृत्व किया यह समझते हुए की महिलाओं को सशक्त बनाना सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय विकास दोनों के लिए मौलिक था।

मुख्य धारा के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाए :– 19वीं सदी के अंत में और 20वीं सदी की शुरुआत में जब भारत का राष्ट्रवादी आंदोलन जोर पकड़ रहा था, तब महिलाएं स्वतंत्रता के आंदोलन को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही थी। विभिन्न राष्ट्रवादी अभियानों और आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी ने संघर्ष की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाई।

स्वदेशी आंदोलन और ब्रिटिश वर्चस्व को चुनौती देना :– महिलाओं की भागीदारी का एक उल्लेखनीय उदाहरण 1905 – 1908 का स्वदेशी आंदोलन था। इस दौरान महिलाओं ने स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार और ब्रिटिश उत्पादों के बहिष्कार के लिए जोश से रैली निकाली। वे स्वतंत्रता और घरेलू रूप से निर्मित वस्तुओं के उपयोग की कट्टर समर्थक बन गई, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के प्रभुत्व को चुनौती देना था।

महिला संगठनों और नेताओं का गठन

शुरुआती राष्ट्रवादी आंदोलन के समानांतर, महिला संगठनों ने आकर लेना शुरू कर दिया। 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ जिसमें महिलाओं की चिताओं को संबोधित किया और सामाजिक सुधारो की वकालत की। कमला नेहरू, रानी वेस्ट और सरोजिनी नायडू जैसे दूरदर्शी नेताओं के उदय ने राष्ट्रवादी आंदोलन को और अधिक जोश दिया। इन नेताओं ने भारत के हितों की जमकर वकालत की और पूरे देश की महिलाओं को स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

विरोध प्रदर्शनों और सविनय अवज्ञा में भागीदारी :– महिलाओं की भागीदारी संगठनों और भाषणों के आगे बढ़कर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी तक पहुंच गई। अपने पुरुष समकक्षों के साथ सहयोग करते हुए उन्होंने मार्च आयोजित किया, सलाखों के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और सत्याग्रह (अहिंसक विद्रोह) में शामिल हुई। औपनिवेशिक अधिकारों द्वारा हिरासत, कारावास और हिंसा का सामना करने के बावजूद इन महिलाओं ने उल्लेखनीय साहस और लचीलापन दिखाया।

मानदड़ तोड़ना और रास्ता बनाना :– संघर्ष की शुरुआती चरणों के दौरान महिलाओं की योगदान की विशेषता सामाजिक सुधार के लिए के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, राष्ट्रवादी आंदोलन में उत्साही भागीदारी और सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक बधाओ के खिलाफ उनकी बढ़ती भागीदारी और नेतृत्व की नींव रखी।

असहयोग आंदोलन में महिलाओं की भूमिका :– महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को बेहतर ढंग से समझने के लिए आई इस बात पर गौर करें कि किस प्रकार उन्होंने असहयोग आंदोलन में अहम भूमिका निभाई और किस प्रकार उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई को प्रभावित किया। 1920 से 1922 तक महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया असहयोग आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश संस्थाओं और वस्तुओं का बहिष्कार करके शांतिपूर्वक ब्रिटिश शासन को चुनौती देना था। इसमें सविनय अवज्ञा और जनभागीदारी के माध्यम से भारतीयों में एकता और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

1920 में महात्मा गांधी द्वारा शुरू कर रखिए गए असहयोग आंदोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वें ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा अभियानों में सक्रिय रूप से शामिल हुई।

ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार :– महिलाओं ने ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार करने और स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने आत्मनिर्भरता और ब्रिटिश आर्थिक शोषण के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में खादी (हाथ से काता हुआ कपड़ा) के कताई को प्रोत्साहित किया।

विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना :– महिलाओं में विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिए ताकि लोगों को ब्रिटिश कपड़े खरीदने से रोका जा सके। नागरिक प्रतिरोध की इस कृत्य ने ब्रिटिश व्यापार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला और आंदोलन की ओर ध्यान आकर्षित किया।

महिला संगठनों की स्थापना :– असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं के मुद्दों को संबोधित करने और उनके अधिकारों की वकालत करने के लिए विभिन्न महिला संगठनों की स्थापना की, जैसे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) और महिला भारतीय संघ (WIA)।

खादी का प्रचार :– महिलाओं ने गांव में खादी कताई और बुनाई को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी ली। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को आंदोलन में भाग लेने और आजीविका कमाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कताई मडल (चरखा सभा) का आयोजन किया।

सार्वजनिक प्रदर्शन में भूमिका :– महिलाओं ने धन जुटाना, पर्चे बांटने और स्थानीय समुदायों को संगठित करने जैसी गतिविधियों में शामिल होकर पुरुष राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं को समर्थन प्रदान किया।

सशक्तिकरण और सामाजिक उत्थान :– असहयोग आंदोलन ने महिलाओ को आगे आने, आत्मविश्वास हासिल करने और अपने अधिकारों का दावा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। इसने कुछ क्षेत्रों में पर्दा प्रथा और बाल विवाह को समाप्त करने जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक उत्थान मैं अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

प्रतीकात्मक विरोध :– महिलाओं ने प्रतिरोध के प्रतीकात्मक कार्यों में भाग लिया जैसे ब्रिटिश कपड़े जलाना और विदेशी वस्तुओं की होली जालना, जिसमें ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध का एक शक्तिशाली संदेश गया।

बलिदान और धीरज :– असहयोग आंदोलन के दौरान महिलाओं को कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिसमें गिरफ्तारी करावास और पुलिस की बर्बरता शामिल थी इन चुनौतियों के बावजूद वे स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ रही।

असहयोग आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और योगदान ने औपनिवेशिक उत्पीड़न को चुनौती देने के उनके संकल्प को प्रदर्शित किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद के चरणों में उनकी बढ़ती भागीदारी का मार्ग प्रशस्त किया।

1857 के विद्रोह से पहले और विद्रोह के दौरान प्रमुख महिला नेता :

मीराबाई होलकर :– संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी 1817 में ही शुरू हो गई थी जब मीराबाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैल्कम के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उसे गुरिल्ला युद्ध में हराया।

रानी लक्ष्मी बाई :– झांसी रियासत की रानी रानी लक्ष्मीबाई को 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। वह झांसी के राजा गंगाधर राव की दूसरी पत्नी थी, जिन्होंने व्यपगत के सिद्धांत का विरोध किया था। उन्होंने झांसी में आत्म समर्पण करने से इनकार कर दिया और 1857 के विद्रोह के दौरान एक पुरुष के रूप में बहादुरी से लड़ी और ब्रिटिश सेना से लड़ते हुए युद्ध के दौरान शहीद हो गई।

झलकारी बाई :– रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना में एक सैनिक, दुर्गा दल, रानी के सबसे भरोसेमंद सलाहकारों में से एक बन गया। वह रानी को खतरे से बचाने के लिये अपनी जान जोखिम में डालने हेतु जानी जाती है। आज तक बुंदेलखंड के लोग उनकी वीरता की गाथा को याद करते हैं, और उन्हें अक्सर बुंदेली पहचान के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस क्षेत्र के कई दलित समुदाय उन्हें भगवान के अवतार के रूप में देखते हैं और उनके सम्मान में हर साल झलकारीबाई जयंती भी मनाते हैं।

रानी वेलु नचियार :– वर्ष 1857 के विद्रोह से कई वर्ष पूर्व, वेलु नचियार ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा और इसमें विजयी हुईं। वर्ष 1780 में रामनाथपुरम में जन्मी, उनका विवाह शिवगंगई के राजा से हुआ था। ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ युद्ध में अपने पति के मारे जाने के बाद उन्होंने संघर्ष में प्रवेश किया तथा पड़ोसी राजाओं के समर्थन से विजय प्राप्त कीं। उन्होंने पहले मानव बम का निर्माण किया साथ ही वर्ष 1700 के दशक के अंत में प्रशिक्षित महिला सैनिकों की पहली सेना की स्थापना की। माना जाता है कि उनके सेना कमांडर कुयली ने खुद को आग लगा ली तथा ब्रिटिश गोला बारूद के ढेर में चली गई थी।

हजरत महल बेगम :– लखनऊ के पदस्थ शासन की पत्नी थी जिन्होंने 1857 के विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया था। साहसी और दृढ़निश्चयी बेगम हजरत महल ने प्रमुख नेता के रूप में इतिहास में अपना स्थान बना लिया है। उन्होंने कभी भी अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया, बल्कि अपने निर्वासन के वर्षों के दौरान भी प्रतिरोध जारी रखने का विकल्प चुना।

1857 के विद्रोह के बाद :

कमला देवी चट्टोपाध्याय :– प्रमुख समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और महिला अधिकारों की समर्थक कमला देवी चट्टोपाध्याय ने स्वतंत्रता पूर्व भारत में ग्रामीण कारीगरों के उत्थान, स्वदेशी उद्योगो को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए काम किया।

कस्तूरबा गांधी :– कस्तूरबा का जन्म 11 अप्रैल 1869 को गोकुलदास कपाड़िया और व्रजकुंवरबा कपाड़िया की पुत्री के रूप में हुआ था। यह परिवार गुजराती हिंदू व्यापारियों की मोधबनिया जाति से संबंधित था और तटीय शहर पोरबंदर में रहता था, महात्मा गांधी की पत्नी जिन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा महिला शिक्षा और सशक्तिकरण की वकालत की और भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके प्रयास का समर्थन किया।

हंसा मेहता :– 1962 में श्रीमती हंसा मेहता की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद द्वारा नियुक्त किया गया था। इसका उद्देश्य शिक्षा के सभी स्तरों पर लड़कों और लड़कियों के लिए पाठ्यचर्या के विभेदीकरण की सावधानीपूर्वक जाँच करना था। अपनी अध्यक्षता के दौरान, उन्होंने भारतीय महिला अधिकार और कर्तव्यों का चार्टर तैयार किया, जिसमें महिलाओं के लिए लैंगिक समानता और नागरिक अधिकारों की मांग की गई। एक शिक्षिका राजनायिक और स्वतंत्रता सेनानी, वे भारत की स्वतंत्रता और महिला अधिकारों की वकालत करने वाली अंतरराष्ट्रीय मंचों का हिस्सा रही और स्वतंत्रता के बाद की नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रतिलता वोडेयार :– एक बहादुर और क्रांतिकारी, उन्होंने ब्रिटिश क्लब पर हमले का नेतृत्व किया जिससे प्रतिरोध की भावना उजागर हुई। उनके बलिदान और दृढ़ संकल्प औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई को प्रेरित करता है।

सरोजिनी नायडू :– 'भारत की कोकिला' के नाम से मशहूर एक कवित्री स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रमुख सदस्य थी। उनकी वाकपटुता और नेतृत्व ने स्वतंत्रता संग्राम में बहुत योगदान दिया।

विजयलक्ष्मी पंडित :– एक राजनायिक और राजनीतिक और संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला थी। एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उषा मेहता :– एक गांधीवादी कार्यकर्ता जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत कांग्रेस रेडियो का नेतृत्व किया और जनता को प्रेरित करने और सूचित करने के लिए वायु तरंगों का उपयोग किया।

दुर्गाबाई देशमुख :– सामाजिक कार्यकर्ता, वकील और राजनीतिज्ञ इन्होंने महिला अधिकारों, श्रम अधिकारों और शिक्षा पर लोगों के उत्थान के लिए काम किया। उनके प्रयासों में स्वतंत्रता के बाद समावेशी सामाजिक परिवर्तन का मार्गदर्शन किया।

सरोजिनी नायडू भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानियों में गौरवपूर्ण स्थान रखती है। वे भारत की महिलाओं को जागृत करने के लिए जिम्मेदार थी। वे 1925 में कानपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष थी।

अरुणा आसफ अली :– ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत के संकेत के रूप में बॉम्बे के गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

रानी गाइदिन्यूल :– वर्ष 1915 में वर्तमान मणिपुर में जन्मी रानी गैदिनल्यू एक आध्यात्मिक नगा और राजनीतिक नेता थीं, जिन्होंने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी। वह हेरका धार्मिक आंदोलन में शामिल हो गईं जो बाद में अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने वाला एक आंदोलन बन गया। इन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह कर दिया और करों का भुगतान करने से इंकार कर दिया तथा लोगों से भी ऐसा करने के लिये कहा। इन्हें पकड़ने के लिये अंग्रेजों ने एक तलाशी अभियान शुरू किया, लेकिन फिर भी वह गिरफ्तारी से बच गईं। गैदिनल्यू को अंततः वर्ष 1932 में गिरफ्तार कर लिया गया था तब वह केवल 16 वर्ष की थी और बाद में उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई ।

वह वर्ष 1947 में जेल से रिहा हुई थीं तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गैदिनल्यू को 'पहाड़ियों की बेटी' के रूप में वर्णित किया, और उनके साहस के लिये उन्हें 'रानी' की उपाधि दी।

मैडम भीकाजी कामा :– दादाभाई नौरोजी से प्रभावित थी और यूनाइटेड किंगडम में भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत थी। उन्होंने 1960 में स्टंटगार्ट (जर्मनी) में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में पहला राष्ट्रीय ध्वज फहराया, फ्री इंडिया सोसाइटी की स्थापना की और अपने क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने के लिए वंदे मातरम नामक पत्रिका शुरू की।

सुचता कृपलानी :– समाजवादी विचारधारा वाली एक प्रखर राष्ट्रवादी थी वह जयप्रकाश नारायण के करीबी सहयोगी थी जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था।

राजकुमारी अमृत कौर 1991 से ही गांधी जी की गरीबी अनुयाई थी। उन्होंने 1930 के नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। में स्वतंत्र भारत की पहली स्वास्थ मंत्री।

आयरलैंड में जन्मी रानी वसंत भारत के स्वतंत्रता संग्राम की प्रबल समर्थक थी। 1916 में उन्होंने मद्रास होम रूल लीग की शुरुआत की। इसके अलावा उन्होंने थियोसॉफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया का गठन किया। 1917 में वे कलकात्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की अदम्य भावना और अटूट समर्पण देश के इतिहास का अभिन्न अंग है, उत्पीड़न को चुनौती देने, बदलाव की वकालत करने और स्वतंत्रता के लिए योगदान देने की उनके दृढ़ संकल्प ने एक अस्थाई विरासत छोड़ी है। जब हम उनके अमूल्य भूमिका पर विचार करते हैं, तो हमें भारत के भाग्य को आकार देने और प्रगति और समानता की ओर चल रही यात्रा में महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की याद आती है।

संदर्भ :–

- https://www.ksgindia.com/blog/role-of-women-in-the-freedom-struggle-for-independence.html
- https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/women-heroes-of-india-s-freedom-struggle